**दिल्ली में ब्रह्माकुमारी संस्थान द्वारा आयोजित कार्यक्रम में माननीय अध्यक्ष का सम्बोधन**

इस शताब्दी वर्ष के अंदर यह सकारात्मक वर्ष हमारे जीवन में नया सकारात्मक संदेश, नई ऊर्जा और नया सामर्थ्य लेकर आए तथा हम सब मिलकर भारत के प्राचीन राजयोग द्वारा एक स्वर्णिम युग की पुनर्स्थापना कर सकें। मुझे खुशी है कि ब्रह्माकुमारी संस्थान लगातार 8 दशकों से व्यक्ति निर्माण से राष्ट्र निर्माण और राष्ट्र निर्माण से विश्व निर्माण के लिए लगा हुआ है। इस संस्थान ने व्यक्ति के जीवन के अंदर एक आंतरिक ऊर्जा, आंतरिक चेतना, सकारात्मक दृष्टिकोण तथा राजयोग के माध्यम से व्यक्ति के जीवन के अंदर आंतरिक ऊर्जा का एक प्रभाव पैदा किया है। मुझे बहुत नजदीक से इस संस्थान की गतिविधियों और कार्यक्रम को देखने का अवसर प्राप्त हुआ है। इस संस्थान ने आध्यात्मिक ज्ञान से व्यक्ति निर्माण का कार्य केवल भारत में ही नहीं बल्कि पूरे विश्व में अधिकतम देशों के अंदर किया है। इसके साथ ही इस संस्थान ने विश्व के अंदर मानव समाज में एक सकारात्मक परिवर्तन भी किया है।

मुझे खुशी है कि आज राजयोग द्वारा इस परिवर्तन के सकारात्मक प्रभाव केवल भारत में ही नहीं बल्कि दुनिया में भी नजर आ रहे हैं। इसीलिए, आज संस्थान ने यह तय किया है कि हम भारत के प्राचीनतम राजयोग, योग विज्ञान और आध्यात्मिक दिशा से इस सृष्टि के अंदर एक स्वर्णिम युग की शुरूआत करेंगे।

जब व्यक्ति के जीवन में हमेशा सकारात्मक ऊर्जा, सकारात्मक सोच और सकारात्मक चिंतन रहेगा, तो वह जीवन में आने वाली हर चुनौतियों का समाधान भी सकारात्मक दृष्टि से करने का कार्य करेगा।

आप जितना राज योग, ध्यान योग, आध्यात्मिक योग को करेंगे तो एक सामूहिक शक्ति से नए विचार उत्पन्न होंगे, नई ऊर्जा मिलेगी, कार्य करने में सकारात्मक प्रेरणा मिलेगी और अपने जीवन को शांतिपूर्ण तरीके से जीने की राह मिलेगी। अगर सकारात्मक परिवर्तन लाना है तो हमें सकारात्मक सोच, सकारात्मक चिंतन, सकारात्मक विचारों से चलना होगा। दादा लेखराज जी ने इसकी शुरुआत की थी और कहा था कि स्वयं परिवर्तन से विश्व परिवर्तन होगा। सारे विश्व का एक भगवान है। आज हम दुनिया के अंदर देख रहे हैं कि भारत इसी आध्यात्मिक चिंतन, सोच, विचार और आध्यात्मिक ज्ञान के माध्यम से विश्व का नेतृत्व कर रहा है। हम सब लोग आज गौरवान्वित हैं कि हमने अपनी आध्यात्मिक संस्कृति, अपने योग को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर वैश्विक पहचान बनाने के लिए सकारात्मक काम किया और उसके सकारात्मक परिवर्तन व्यक्ति के जीवन में हुए हैं।

मैं आपको अंतर्राष्ट्रीय दिवस की भी शुभकामनाएं देता हूं, बधाई देता हूं। हम किस तरीके से योग के माध्यम से मन और शरीर को स्वस्थ्य रखते हुए अपनी कार्य कुशलता को बढ़ा रहे हैं। इसलिए हम एक सकारात्मक वर्ष के अंदर इस संकल्प के साथ कि मानव जीवन के अंदर हम आध्यात्मिक ज्ञान, संस्कृति और राजयोग के माध्यम से व्यक्ति के जीवन में शांति और शांति के माध्यम से नए मार्ग प्रशस्त करने का काम करेंगे। हमारे बीच में शिवानी बहन भी बैठी हैं, जो अपने विचारों, अपने आध्यात्मिक ज्ञान से लाखों लोगों के जीवन में रोशनी लाने का काम कर रही हैं। लाखों ब्रह्मकुमारों, लाखों ब्रह्मकुमारी दादी, जिन्होंने अपना जीवन इस राष्ट्र के लिए समर्पित कर दिया है, अध्यात्म

के लिए समर्पित कर दिया है, उनके इन्हीं प्रयासों के कारण आज इस संस्थान ने चाहे किसान हो, युवा हो, महिला हो, मजदूर हो, समाज के हर तबके और व्यक्ति के जीवन में एक सकारात्मक ऊर्जा, सकारात्मक चिंतन, सकारात्मक दिशा दी है। मैं उन सबको प्रणाम करता हूं कि आपके इन प्रयासों के कारण आज विश्व को एक नई दिशा मिली है। आप सबको पुन: बहुत-बहुत धन्यवाद। ओम शांति।

---